

Mahashivaratri Puja

Date	:	16th March 2003
Place	:	Pune
Type	:	Puja
Speech Language	:	English & Hindi

CONTENTS

I Transcript

English	02 - 02
Hindi	03 - 09
Marathi	-

II Translation

English	-
Hindi	05 - 06
Marathi	10 - 12

ORIGINAL TRANSCRIPT

ENGLISH TALK

Today we are going to worship Shri Shiva, Sadashiva. His quality is that He is forgiveness personified. The amount of forgiveness He has, has helped many of us to exist, otherwise this world would have perished, so many would have been finished because you know what is the condition of human beings. They don't understand what is wrong, what is right. Apart from that, they cannot forgive. They go on making mistakes - doesn't matter. But they cannot forgive others. This is what we have to learn from Shri Sadashiva.

(Shri Mataji speaks in Hindi) I know you want Me to speak in English language, only. But people who don't know English are outnumbering you. What I'm trying to say, that it's very important to understand when you are worshipping Shri Shivashankar that He is the complete embodiment of forgiveness. He forgives. He forgives everything very sweetly. As one would forgive all small children. He forgives. He doesn't get angry. He's not that easily perturbed.

Also we have certain amount of prejudices. For example, a woman in India, if she speaks, then people don't like it. A woman should not speak, a man can speak. And a woman can never beat – a woman can never beat a man, even if the man kills the wife. That is the criteria of a good wife in India, or a good woman. So you can imagine how men are getting towards their discretion. All this kind of concession that is given, is very dangerous, is the destructive of the whole community.

Same I've seen abroad. There are people who go on beating their wives, killing their wives – I don't know all kinds of things. Because they have married somebody, they think they have every right to expect everything good from their wives, while they may not be at all good, and they go on torturing their wives. Not only that but in the school, the teachers, they ill-treat the students so badly, the students pick it up. And later on they carry on the tradition of beating others and troubling others.

So every time you say, “I get very angry,” tell yourself you are on the wrong path. I've told so many times to so many of you that to boast of your anger is the worst thing because it is like boasting about your sins you are committing. These are the sins. I can understand some people who are drunkards, or some who are mad, or some who are out of their minds - but a mad person you'll find very, very sensible otherwise, can be very ferocious, can be very dangerous.

It is difficult to say from where do you get these qualities, because none of the Divine Personalities had this kind of thing. For no rhyme and reason They won't lose their temper and even if They do, it has to be a very strong reason up to the point of destruction. But I can understand Them, because They have to maintain this world and They have to look after the people who are supposed to be human beings. But sometimes I've seen human beings are even worse than animals. They get provoked for nothing at all. What is the reason? Why are you angry? They'll give you an excuse which is absolutely unreasonable. In this world you have come to enjoy peace and joy. Without peace, you can't have joy. If you cannot give peace to others, how can you have joy? And the way people treat others in such a contemptuous manner, it's very surprising, what do they think of themselves? Why should they think so low about other people? It's beyond understanding to see a man losing temper on small, small things. But actually they are cowards. If it comes to some facing some real problem in life, they recede back. Then they cannot come forward. This is the biggest tragedy of the whole thing.

(Shri Mataji speaks in Hindi)

ORIGINAL TRANSCRIPT

HINDI TALK

Scanned from Hindi Chaitanya Lahari

(अनुवादित)

आज हम श्री शिव-सदाशिव की पूजा करेंगे। उनका गुण यह है कि वे क्षमा की मूर्ति हैं। उनके क्षमा के गुण के कारण ही हममें से बहुत से लोग आज जीवित हैं अन्यथा ये विश्व नष्ट हो गया होता। बहुत से लोग खत्म हो गए होते क्योंकि मानव की स्थिति को तो आप जानते ही हैं। मनुष्य की समझ में ही नहीं आता कि उचित क्या है और अनुचित क्या है। इसके अतिरिक्त वे क्षमा भी नहीं कर पाते और गलतियों पर गलतियाँ करते चले जाते हैं। परन्तु अन्य लोगों को क्षमा नहीं कर सकते। श्री सदाशिव से हमने यही गुण सीखना है।

(हिन्दी प्रवचन)

आज हम लोग श्री सदाशिव की पूजा करने वाले हैं। इनका विशेष स्वभाव यह है कि इनकी क्षमाशीलता इतनी ज्यादा है कि उससे कोई इन्सान मुकाबला नहीं कर सकता। हर हमारी गलतियों को वो, माफ करते हैं वो अगर न करते तो यह दुनिया खत्म हो सकती थी क्योंकि उनके अन्दर वो भी शक्ति है जिससे वो इस सृष्टि को नष्ट कर सकते हैं। इतने क्षमाशील होते हुए भी यह शक्ति उनके यहां जागृत है और बढ़ती ही रहती है। इसी शक्ति से जिससे वो

क्षमा करते हैं उसी परिपाक से या कहना चाहिए अतिशयता से फिर वो इस संसार को नष्ट भी कर सकते हैं। तो पहले तो हमें उनकी क्षमाशीलता सीखनी चाहिए। किस कदर क्षमाशील, छोटी-छोटी चीजों को लेकर के हम झगड़ा करते हैं, छोटी-छोटी बातों पर हम झगड़ा करते हैं। पर यह किस कदर क्षमाशील हैं और क्षमा करते-करते उस चरम सीमा पर पहुँच जाते हैं जहां से इनके अन्दर यह नष्ट करने वाली शक्ति जागृत होती है। इसी से वो अपने को नष्ट भी कर सकते हैं, इस सारे ब्रह्मांड को नष्ट कर सकते हैं जो भी कुछ सृष्टि बनाई गई वो सारी नष्ट हो सकती है। इसलिए हम लोगों को याद रखना चाहिए कि गर हम क्षमा करना नहीं सीखेंगे, गर हमारे अन्दर क्षमाशीलता नहीं आएगी तो हमारे अन्दर एक दिन बहुत ज्यादा नष्ट करने की शक्ति आ जाएगी। हम ही लोग अपने ही लोगों को नष्ट करेंगे। इसलिए हर समय दक्ष रहना चाहिए, पता लगाना चाहिए, नजर रखनी चाहिए कि हम बेकार में तो लोगों पर नाराज नहीं होते, बेकार में हम दूसरों के साथ दुष्टता तो नहीं करते? किसी भी हालत में आपको अधिकार नहीं है कि आप किसी पर नाराज हों। जब शिव नहीं होते तो आप क्यों होते हैं?

लेकिन इन्सान बहुत ज्यादा - बहुत ज्यादा नाराज होता है, इतने तो कोई जानवर भी नहीं होते, कोई वजह न हो तो जानवर कुछ नहीं कहते। इसी प्रकार जब हम छोटी-छोटी बातों पर बिगड़ते हैं तो याद रखना चाहिए कि एक शक्ति है शिव की, वो भी हमारे अन्दर कार्यान्वित है। और वो यही है कि हम जब दूसरों पर बात-बात पे बिगड़ते हैं, बात-बात में नाराज होते हैं, उनकी कोई चीज हम क्षमा नहीं कर सकते तो फिर ऐसे इन्सान कहाँ पहुँच सकते हैं।

जहाँ-जहाँ बड़े युद्ध हुए, जहाँ-जहाँ बड़ी आफतें आई, वहाँ पर यही कारण रहा है कि मानव जाति को दमन किया गया है, नष्ट किया गया है। यह शक्ति पहले ही से आ जाती है, बगैर कोई कारण के मनुष्य मनुष्य को ही नष्ट करता है। हर जगह, उसकी यह प्रक्रिया क्यों होती है और कैसे होती है यह बात हम लोगों को सोचना नहीं। यही सोचना है कि हम तो ऐसे क्षुद्र और निम्न स्तर के कार्य में उलझते तो नहीं। अपने जीवन में हम जितने शान्त रहें, शान्तिपूर्वक हर एक चीज का हल निकालें, उतने ही हमारे भी जीवन में शान्ति फैल सकती है, हमारा भी जीवन शान्तिमय हो सकता है। किन्तु प्रश्न यह है कि मनुष्य अपने ऊपर ही कोई दावा नहीं रख सकता, अपने को कन्ट्रोल (Control)

नहीं कर सकता। उसका स्वभाव ही ऐसा होता है कि उसमें ही बहता जाता है और उसमें वो सन्तोष करता है कि मैंने बड़ी अच्छी सबको सजा दी, सब पे मैं बिगड़ा, सबसे मैं नाराज हो गया! यहाँ तक कि अनेक देशों में यह प्रश्न है। एक देश दूसरे देश से चिढ़ गया। अगर एक ही आदमी चिढ़ता है तो सारे उस देश के लोग लग गये। उद्धार के लिए कोई नहीं मिलेगा-उद्धार के लिए कोई देश के लोग नहीं मिलेंगे, सिर्फ मारने पीटने के लिए और बिगड़ने के लिए फौरत लोग खड़े हो जाएंगे! यह सबसे बड़ा कमाल है। गर किसी से कहो कि हमें यहाँ उद्धार करना है तो कहेंगे अच्छा आप करिए, हम देखते हैं और वहीं गर कोई आदमी हाथ में कोई आयुध लेके दौड़े तो कहेंगे कि हमें भी दो हम भी मारेंगे। यह मनुष्य की तबीयत समझ में नहीं आती। किसी को मारने पीटने में और किसी को तंग करने में और किसी पे गुस्सा करने में मनुष्य को इस कदर क्या सुख मिलता है? पर अब देख लीजिए रास्ते पे जाते-जाते देखा कि एकदम भीड़ लग गई-क्या हुआ? कुछ झगड़ा हो गया। तो आप वहाँ क्या कर रहे हैं? कोई तो कहेंगे-हम भी उसमें शामिल हैं और कोई तो कहेंगे कि हम देख रहे हैं। यह हमारे अन्दर जो प्रकृति में एक अजीब सी चीज़ आई हुई

है, यह हमारे अन्दर से निकालने वाला एक ही है, वो हैं शिव शंकर। इनकी आराधना से, इनको पूजने से और इनको मानने से-हृदय से, मनुष्य का क्रोध, गुस्सा नष्ट हो जाता है। आश्चर्य कि बात है कि कृष्ण ने भी सबसे बड़ा दोष मनुष्य का क्रोध -क्रोधापि जायते - क्रोध के साथ में यह सब चीजें जागृत होती हैं। अपने यहां तो लोग बड़े गर्व से कहेंगे - मुझे बड़ा गुस्सा आया उसपे, मैं बहुत नाराज हो गया उसपे-इसमें कोई मनुष्यता मुझे तो दिखाई नहीं देती। पर यह बड़ी साधारण सी बात है कि गुस्सा हो जाना, छोटी-छोटी बात पर कोई न कोई बहाने ढूँढ लेना और गुस्सा हो जाना। फिर जब यह सामूहिक हो जाता है गुस्सा, उस सामूहिक गुस्से से बड़ी बहुत सारी बातें हो जाती हैं। युद्ध हो जाते हैं, बहुत सारे घर उजड़ जाते हैं, बहुत सारी कुटुम्ब व्यवस्था खत्म हो जाती है। दिन-ब-दिन मैं देखती हूँ कि बजाय इसके कि मनुष्य का गुस्सा कम हो जाए, वो बढ़ता ही जा रहा है और बड़े गर्व से कहेंगे कि हमें तो बड़ा गुस्सा आया, हम तो बड़े गुस्से वाले हैं।

(अंग्रेजी प्रवचन)

मैं जानती हूँ कि आप चाहते हैं कि मैं केवल अंग्रेजी भाषा में बोलूँ परन्तु अंग्रेजी समझने वाले

लोगों की संख्या बहुत कम है। मैं कहना ये चाह रही हूँ कि श्री शिव की पूजा करते हुए हमें यह समझना आवश्यक है कि वे क्षमा की मूर्ती हैं। वे क्षमा करते हैं - हर अपराध को इतने प्रेम पूर्वक क्षमा करते हैं जैसे व्यक्ति अपने बच्चों को क्षमा करते हैं। वे क्षमा करते हैं क्रुद्ध नहीं होते। छोटी-छोटी बातों पर वे भड़कते नहीं। हम लोगों में कुछ पूर्वाग्रह (Prejudices) भी हैं। उदाहरण के रूप में भारत में महिला का कुछ बोलना लोगों को अच्छा नहीं लगता। उनके अनुसार महिला को नहीं बोलना चाहिए। पुरुष बोल सकता है महिला नहीं। पीटने का हक तो उन्हें दिया ही नहीं जाता। पुरुष चाहे तो महिला की हत्या कर दे और महिला को पुरुष को पीटने का भी अधिकार नहीं है। भारत में अच्छी पत्नी और अच्छी महिला को आंकने के लिए यही मापदण्ड है। वह कल्पना कर सकती हैं कि किस प्रकार पुरुष विनाश की ओर जा रहा है। इस प्रकार के दिए गए अधिकार भयानक हैं और पूरे समाज के लिए विध्वंसकारी हैं। विदेशों में भी मैंने ऐसा ही देखा है। वहां भी लोग अपनी पत्नियों को पीटते हैं, उनकी हत्या कर देते हैं। न जाने क्या-क्या करते हैं! क्योंकि उन्होंने किसी महिला से विवाह किया है इसलिए सोचते हैं कि उन्हें सभी अधिकार हैं,

अपनी पत्नियों से सभी प्रकार की अच्छाई की आशा का अधिकार है चाहे उनमें कोई भी अच्छाई न हो। वे अपनी पत्नियों को सताते ही चले जाते हैं। इतना ही नहीं स्कूलों में अध्यापक विद्यार्थियों के साथ बहुत ही बुरा व्यवहार करते हैं। बच्चे भी उनसे यह व्यवहार सीख लेते हैं और इस प्रकार से दूसरों को सताने और कष्ट देने की परम्परा चलती रहती है। अतः जब जब भी आप कहें कि मुझे बहुत क्रोध आता है, तो स्वयं को बताएं कि मैं गलत मार्ग पर जा रहा हूँ। मैंने बहुत बार आप लोगों को बताया है कि अपने क्रोध की ढींग हांकना सबसे बुरी बात है। यह तो अपने पापों की शोखी बंधारना है। ये कार्य पाप हैं। शराबी, पागल और विक्षिप्त लोग यदि ऐसा करें तो समझ में आता है परन्तु अन्यथा बहुत ही संवेदनशील व्यक्ति यदि आक्रामक हो तो बहुत ही खतरनाक बात है। ये कहना कठिन है कि ये दुर्गुण आपमें कहाँ से आते हैं क्योंकि किसी भी दिव्य व्यक्तित्व मनुष्य को बिना किसी कारण के क्रोधित होते हुए नहीं देखा गया। ऐसे लोग यदि क्रुद्ध हुए भी तो बहुत बड़े कारण से जिससे विनाश ही होने वाला हो। परन्तु उनके ऐसा करने की धारणा मैं समझ सकती हूँ। उन्हें यह विश्व चलाना है और मानव की देखभाल करनी है। मैंने

देखा कि कई बार मनुष्य पशुओं से भी बदतर होते हैं। बिना किसी कारण के वो भड़क जाता है। उनसे पूछा जाए कि आप क्यों क्रोधित हैं तो वे बेकार के बहाने बनाएंगे।

शान्ति का आनन्द लेने के लिए आप इस विश्व में आए हैं। बिना शान्ति के आप आनन्दित नहीं हो सकते। यदि आप शान्ति नहीं प्रदान कर सकते तो किस प्रकार आनन्दित हो सकते हैं? परन्तु जिस अपमानजनक तरीके से लोग व्यवहार करते हैं उस पर हैरानी होती है। न जाने वे अपने को क्या समझते हैं। ये बात समझ पाना कठिन है कि वे अन्य लोगों को इतना घटिया क्यों समझते हैं। छोटी-छोटी चीजों पर सन्तुलन खो बैठना समझ में नहीं आता। ऐसे लोग वास्तव में कायर होते हैं। जीवन में यदि उन्हें किसी समस्या का सामना करने का अवसर आ जाए तो वे पीछे हट जाते हैं। आगे नहीं बढ़ पाते। यह बहुत बड़ी त्रासदी है।

(हिन्दी प्रवचन)

हमारे देश में भी लोग गुस्सेवाले आदमी को पहचानते हैं। बस्ती में उसका नाम हो गया गुस्सेवाला''। 'ये गुस्सेला है, ये गुस्साड़ा है'। ऐसे-ऐसे नाम उसके होते हैं और ऐसे आदमी से दूर ही रहना चाहते हैं। ठीक है, किसी ने गलती कर भी दी, उसे

माफ कर दीजिये। किसी ने कुछ ऐसा काम भी कर दिया है जो नहीं करना चाहिए, उसे भी माफ कर दीजिये, क्योंकि कल आप ऐसा काम करें - "आप" करे तो आप किस की सजा लेंगे? कौन आपको सजा देगा? इसलिए ये ही समझ लीजिये कि हम सहजयोगियों को बिल्कुल भी अधिकार नहीं कि हम किसी को सजा दें, और उनको शिक्षा दें। बहुत से लोग तो मैंने देखा बड़े खोपड़ी पर जमा हो जाते हैं।

शिवजी को जिसने मान लिया वो असली पार है, शिवजी का स्वभाव जिसके अन्दर आ गया वही है और उसके प्रोटेक्शन के लिए भी शिवजी हैं। जो आदमी सीधा, सरल स्वभाव से ही है उसको घबराने की कोई बात ही नहीं है उसको सम्भालने वाले शिव शंकर हैं, उसको देखने वाले शिव शंकर हैं। तो इस वजह से आपको उसमें इतना प्रश्न क्या है? क्यों आप किसी से नाराज होते हैं? अजीब-अजीब बातें हैं, कोई साहब कहने लगे कि साहब मैं तो बहुत नाराज हूँ इस आदमी से। मैंने कहा, क्या हुआ भई? कहने लगे इन्होंने हमारे बाप का सब पैसा ले लिया और हमको कुछ नहीं मिला। तो मैंने कहा ये तो आपके बाप को देखना था, पैसा ले लिया तो ले लिया, आप क्यों बिगड़ रहे हो? कहने लगे इसने

कहना चाहिए था कि इसको कि हमारा पैसा आप दे दीजिए, आप दे देते, आप ऐसा काम करते क्या? फिर आप क्यों चाहते हैं कि वो दूसरा आदमी जो हैं वो कह दे कि इसको इतना कम पैसा दे दीजिए। सारी अच्छाई आप दूसरों से उम्मीद रखते हैं, सारी बुराई जो है उसको आप माफ ही नहीं कर सकते। और जो कोई करता है तो उसके लिए आप सोचते हैं कि इसका तो सर्वनाश होना चाहिए। जब तक मनुष्य पार नहीं होता तब तक वो यह भी नहीं देख सकता कि वो क्या है अन्दर, इन्सान है कि जानवर, यह भी नहीं समझ सकता। मैं कहूँगी कि जानवर भी बेकार में कभी नाराज नहीं होता जब तक कि उसको छोड़ो नहीं कोई, वो बेकार में उबलते नहीं रहता। उसमें शिवजी का अंश काफी है पर मनुष्य में कोई-कोई मनुष्य में तो यह पूरी तरह नष्ट हो चुका है। वो तो सोचते हैं कि हजारों लोगों को नष्ट करने का हमको अधिकार है। एक तो हिटलर साहब हो गए उन्होंने न जाने कितने लोगों को मार डाला? वो एक छोटा सा बच्चा तो नहीं पैदा कर सकते और इतने लोगों को उन्होंने मार डाला। क्या सोचकर के, अपने को वो क्या सोचते थे? और जिन लोगों को मारा है उनकी फैमिलीज नष्ट हो गई, सारे देश खराब हो गए तो वो अपने को क्या समझते थे

लाट साहब। इस प्रकार के दो चार तो निकलते ही हैं पर आप को तो इनका उदाहरण नहीं लेना चाहिए। आपके लिए ठीक है, आप सहजयोगी हैं इसलिए आपको क्षमा करना चाहिए। बड़े तबीयत के जो लोग होते हैं वो क्षमा करते हैं, उनकी क्षमाशीलता बहुत जबरदस्त होती है और यही बात है हमारे शिव शंकर में। इसलिए उनको सबसे उंचा भगवान मानते हैं। स्वयं के लिए उनको कुछ नहीं चाहिए। कुछ भी कपड़े पहन लेंगे, नहीं तो बदन में राख लगा लेंगे, कैसी भी स्थिति हो रह लेंगे। उनको कोई चीज की जरूरत नहीं है। पर अगर कोई आदमी किसी के साथ बहुत ज्यादा करीब होता है तो अन्त में वो ही उसका नाश कर देते हैं। जितनी क्षमा की शक्ति उनमें है उतनी ही उनमें नष्ट करने की शक्ति है। इसका कारण क्या है? कारण यह है कि मनुष्य उनको देखकर यह समझ ले कि गर आप किसी के साथ बहुत ज्यादा करीब तो आपका ठिकाना हो जायेगा। अब ये सब लोग गए कहाँ? बड़े-बड़े आए थे रथी-महारथी, इन्होंने इतने धन्य करे और ये गए कहाँ? इनका बड़ा नाम था। बहुतों को मारा, बहुतों को खत्म किया, बहुत से देश के देश खत्म कर दिए। आज वो हैं कहाँ? उनका कोई फोटो भी नहीं लगाता, उनका पुतला तो खड़ा करना

छोड़ दीजिए उनकी शक्ल नहीं देखना चाहते लोग। इस तरह का चरित्र आपको अपना नहीं बनाना चाहिए। यह समझ लीजिए कि आपके नाराज स्वभाव से हो सकता है कि लोग आप से डरें और डर के मारे बहुत से काम करें, पर जो काम डर के साथ होता है उसमें क्या मजा? उसमें क्या विशेषता है? एक सोचने की बात है कि आपने कितने लोग दुनिया में जोड़े हैं अब तक और कितने लोगों को नष्ट कर दिया, कितने लोगों से झगड़ा हो गया? कोई-कोई लोग होते हैं उनका तो धर्म है झगड़ा करना, उठे-बैठे झगड़ा करना। कोई तो भी उनके अन्दर एक लालसा होती है, सवेरे इस से झगड़ा हुआ, दिन में उससे झगड़ा हुआ, शाम को उससे झगड़ा हुआ। ऐसा स्वभाव जिस आदमी का हो जाए उससे तो लोग भागते हैं, वे अगर सामने से आते दिखाई देंगे तो लोग मुड़ जायेंगे दूसरे रास्ते से, इससे प्रेम नहीं बढ़ सकता, सहजयोग तो पूरा प्रेम का कार्य है। इसमें देखिए बड़े-बड़े उदाहरण - इसामसीह ने सूली पे चढ़ कर कहा था कि हे प्रभु, "इनको क्षमा कर दो, क्योंकि यह नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं।" इसी प्रकार गर हमारे अन्दर क्षमाशीलता आ जाएगी तो हम भी शिवजी का, क्या कहना चाहिए कि, शिवजी के सामर्थ्य को प्राप्त करेंगे,



उनके गुणों को प्राप्त करेंगे। गुस्सा थमना, नाराज न होना, ये तो कोई खास चीज नहीं। और इसलिए आज के दिन सबको हमको विचार करना चाहिए कि हम लोग किस कदर दूसरों पर हावी रहते हैं और दूसरों को नष्ट करना चाहते हैं? खासकर हमारे देश में तो मर्दों ने बहुत जुल्म ढाया औरतों पर। और अब भी कर रहे हैं। उसमें सहजयोगियों को नहीं फंसना चाहिए, ये बेकार की चीज है इसका कोई

अर्थ नहीं लगता। शिवजी के आज पूजन में आप लोग सब अपने मन में संकल्प करें कि हम गुस्सा नहीं करेंगे, चाहे कुछ हो जाए हम गुस्सा नहीं करेंगे। गुस्सा का कोई उपयोग ही नहीं तो क्यों गुस्सा करते हो? अपनी तबीयत खराब होती है। इसलिए आज सब लोग शिवजी को याद करें और उनके गुणों को प्राप्त होने की कोशिश करें।

अनन्त आशीर्वाद।

MARATHI TRANSLATION

(Hindi Talk)

Scanned from Marathi Chaitanya Lahari



श्री शिव पूजा

प.पू. श्रीमाताजी निर्मला देवीचे भाषण
पुणे, १६ मार्च २००३

सदैव क्षमा करत रहाणे व क्रोधावर
संयम बाळगणे हेच सहजयोग्यांना
भूषणास्पद आहे.

आज आपण श्रीशिवांची, अर्थात श्रीसदाशिवांची पूजा करणार आहोत. श्रीशिव म्हणजे मूर्तिमंत क्षमाशक्ति, त्यांची ही क्षमाशक्ति इतकी अमाप आहे की तिच्या आधारावरच आपण अजून जिवंत आहोत; नाहीतर ही सारी सृष्टि केव्हाच नाहीशी झाली असती. माणसांची आजची स्थिती काय आहे तुम्ही जाणताच; त्यांच्या आधाराशिवाय कित्येक जण लयाला गेले असते. माणसांना योग्य काय, अयोग्य काय हेच समजेनासे झाले आहे; शिवाय त्यांच्याजवळ क्षमाशक्तीही उरली नाही; स्वतः कितीही चुका करतील पण दुसऱ्यांना त्यांच्या चुकांची क्षमा करणार नाही. श्रीसदाशिवांपासून हाच बोध आपल्याला घ्यायचा आहे.

क्षमाशीलता हा शिवांचा खास स्वभावच आहे; माणूस त्यांच्या क्षमाशीलतेची कल्पनाही करण्यास असमर्थ आहे. आपल्या कसल्याही चुकांची ते क्षमा करतात; तसे नसते तर संबंध जगाचा केव्हांच नायनाट झाला असता, कारण त्यांच्याजवळ सारी सृष्टि नष्ट करण्याचीही शक्ति आहे. इतके क्षमाशील असूनही त्यांची ही संहारशक्ति जागृत आहे व कार्यान्वितही आहे. त्यांच्याजवळ या दोन्ही शक्त्या आहेत; एका बाजूने ते क्षमा करतील तर दुसऱ्या बाजूने संहारही करतील.

म्हणून आपण सर्वप्रथम त्यांच्या सारखे क्षमाशील बनले पाहिजे. आपण सदैव दुसऱ्यांवर रागावत राहतो, छोट्या-छोट्या गोष्टींवरूनही वादविवाद व भांडणे करत राहतो; पण क्षमा करण्याचा विचारही करत नाही. श्रीशिव सुरवातीला क्षमा करतातच; पण त्यालाही मर्यादा असते आणि अपराधांनी परिसीमा गाठली म्हणजे त्यांची संहारशक्ति

जागृत होते. या संहारशक्तिमधून समस्त ब्रम्हांड ते नष्ट करू शकतात; साऱ्या सृष्टीचा नायनाट करायला त्यांना वेळ लागत नाही. म्हणून आपण हे नीट लक्षांत घेतले पाहिजे की आपण आधी अत्यंत क्षमाशील बनले पाहिजे; तो क्षमागुण आपण मिळवला नाही तर आपली प्रवृत्तीही विध्वंसाकडे वळते; आणि आपल्याच भाऊवंदाचा आपण नाश करू लागतो. त्यासाठी सदैव सतर्क व सावधान राहून आपण उगीचच दुसऱ्यांवर नाराज तर होत नाही ना याबद्दल दक्षता बाळगली पाहिजे. कुठल्याही परिस्थितीत दुसऱ्याला जिवे मारण्याचा अधिकार मानवाला नाही. श्रीशिव जर नाराज होत नाहीत तर आपल्यालाही इतरांवर नाराज होण्याचा काय अधिकार आहे? पण माणसामधे दुसऱ्याबद्दलची नाराजी ठेवण्याची घातक संवय आहे. पशुसुद्धां काही विशेष कारण नसेल तर शत्रुत्व ठेवत नाहीत. म्हणून आपण हें समजून घेतले पाहिजे की ऊठसूट झगडे- तंटे करत राहिलो तर हीच संहारशक्ति प्रगट होऊ शकते. दुसऱ्यांना क्षमा करण्याऐवजी त्यांच्याबरोबर भांडणतंटे करत राहणारा माणूस कुठल्या टोकाला जाईल ते सांगता येणार नाही.

जगामधे जेव्हा जेव्हा युद्ध पेटले, भांडणाचा कडेलोट झाला, संकटे आली तेव्हा हेच दिसून आले की त्यामागे मानवजात नाहीशी करण्याचीच प्रवृत्ति होती. ही संहारशक्ति मुळापासूनच असते आणि त्यामुळे माणूस माणसावरच उलटत असतो. हे सगळीकडे घडत आले आहे. हे का व कसे होते याचा विचार करण्याची जरूरी नाही. पण त्याचबरोबर आपण इतक्या क्षुद्र व खालच्या स्तराला जाणे योग्य नाही हे जर आपण नीट



समजून घेतले तर सगळीकडे शांतता नांदू लागेल. आपण स्वतः शांत राहण्यास शिकलो तर जीवनातही शांति निर्माण होईल. पण माणूसच आपल्यावर ताबा कसा ठेवणार हा प्रश्न व अडचण आहे. दुसऱ्यांना शिक्षा करण्यांत व शासन देण्यांत धन्यता मानणे हा माणसाचा स्वभावगुणच आहे काय समजत नाही. देशा-देशांमधेही हाच प्रकार आहे, वैरभावना आहे; देशांतील एक माणूस जरी असा वागू लागला की सगळेच जण त्याच्यामागे उभे राहतात. मग मानव-उध्दारासाठी कोण राहणार? मारपीट करण्यासाठी अनेक लोक तत्पर असतात. एखादा जरी उध्दार कार्याला तळमळीने लागला तर फक्त बघे लोक जमतात; पण हातांत शस्त्र घेऊन मारपीट करणाऱ्याकडून आपणही शस्त्र मागून त्याच्यासारखे वागायला लगेच तयार. माणसाची तबियतच अशी असावी; नाहीतर दुसऱ्यावर राग काढण्यांत, त्रास देऊन तंग करण्यांत काय सुख मिळणार आहे हा विचार तरी त्याला सुचला असता. रस्त्यांत जरा कुठे जरा भांडण तंटा झाला की गर्दी जमते.

माणसामधील ही वाईट प्रवृत्ति दूर करणारी एकमेव शक्ति म्हणजे शिवशक्ति. हृदयापासून शिवांचा आदर ठेऊन त्यांची आराधना केली तर माणसामधील क्रोध नाहीसा होईल. श्रीकृष्णांनीही क्रोध हाच माणसाचा मोठा दुर्गुण आहे असे सांगितले आहे. आपल्याकडेही

समाजांत क्रोध उफाळून येतो तेव्हा मला फार दुःख होते. छोट्या-मोठ्या कारणावरूनही ऊठसूठ रागवणे वा ओरडणे अगदी चुकीचे आहे आणि हीच भावना जर सामूहिक स्तरावर पसरली तर जाळपोळ, विध्वंस, युध्द, घरादारांचा नाश इ. अनर्थ पैदा होतात. जेवढे मी हे बघत राहते तेवढे हे अनिष्ट प्रकार वाढतच आहेत. मला फार राग येतो असे गौरवपूर्वक सांगणारेही असतात. म्हणून श्रीशिवशंकरांची पूजा करणाऱ्यांनी हे लक्षांत ठेवले पाहिजे की ते क्षमेचे मूर्तिमंत स्वरूप आहेत; ते सदैव सर्वांना क्षमा करत असतात. स्वतःच्या मुलांना आपण क्षमा करतो तसे ते सर्वांना क्षमा करत असतात त्यांना कधी राग येत नाही. तसेच ते सहसा विचलित होत नाहीत. याशिवाय प्रत्येक माणसाचे कांही पूर्वग्रह असतात. उदा. महिलांनी जास्त बोललेले कुणाला आवडत नाही; पुरुषाने बडबड केलेली चालते पण स्त्रीने तसे केलेले खपत नाही; तसेच बाईने पुरुषावर हात उगारणे पण चुकीचे मानतात. हीसुद्धा घातक व समाजाला नुकसानकारक अशी समजूत आहे. परदेशांतही मी पाहते की पत्नीला मारहाण करणारे, तिला ठार मारणारे नवरे असतात. लग्नाची पत्नी म्हणजे तिच्या बाबतीत आपल्याला पूर्ण अधिकार आहे, तिने चुका करता कामा नये अशीच जणू समजूत असते. तोच प्रकार शाळेतील शिक्षकांचा; ते मुलांना फार वाईट तऱ्हेने वागवतात. तीच प्रवृत्ति मोठे झाल्यावर मुलांमध्ये येते. स्वभावातील हा रागीटपणा हा फार मोठा दोष आहे. राग आला तर आधी स्वतःला बजावा की 'मी रागवणे चूक आहे' मी अनेक वेळां तुमच्यापैकी पुष्कळजणांना सांगितले आहे की स्वतःच्या रागीटपणाचा अभिमान दाखवू नका. सहजयोग्यांना हे शोभत नाही. मुख्य माणसाने किंवा दारुड्याने शिष्या दिल्यासारखे रागावून बोलणे हे फार चुकीचे व नुकसानकारक आहे. हा स्वभावांतील रागीटपणा कुटून येतो हे सांगणे अवघड आहे. संत लोक असे नसतात; कांहीही झाले तरी ते संतापत नाहीत किंवा संयम सोडत नाहीत. त्यांना जगामधे सर्वांना सांभाळून घ्यायचे असते व जगामधे शांति निर्माण करायची असते.

कधी कधी मी पाहते की माणसे जनावरांपेक्षाही वाईट तऱ्हेने वागतात; त्यांना राग आवरता येत नाही; क्रोधाची अनेक कारणे कारणे सांगता येतील पण तरीही त्यांचे समर्थन करणे चूकच आहे. तुम्ही शांतीचा आनंद मिळवण्यासाठी इथे आला आहात. आजूबाजूला शांति निर्माण केली नाहीत तर तुम्हांला आनंद कसा सापडणार? सगळीकडे अशांतता पसरवणारे, वाईट व्यवहार करणारे लोक स्वतःला कोण समजतात कोण जाणे. छोट्या-छोट्या निमित्ताने व क्षुल्लक गोष्टींवरून

संयम सुटणें फार चुकीचे आहे. पण तसे पाहिले तर हा एक प्रकारचा भ्याडपणा आहे व असे लोक खरोखर अडचणीत वा संकटात आले तर पायात शेपूट घालणारे असतात.

आपल्याकडेही असे रागीट व संतापी लोक असतात आणि त्यांच्यापासून आपणही चार हात दूर राहणें चांगले. कुणी कांही चूक केलीच तर त्याला माफी केलेली बरी; उदा. समजा तुम्ही अशी चूक केली तर कुणाला शिक्षा करणार? सहाजयोग्यांना कुणावर रागावण्याचा किंवा दुसऱ्यांना त्यांच्या चुकांची शिक्षा देण्याचा मुळीच अधिकार नाही. शिवजींना जे मानतात, शिवजींसारखा ज्यांचा स्वभाव आहे तेच खरे पार झाले म्हणायचे, आणि त्यांचे संरक्षणही शिव करत राहतात. शांत, क्षमाशील व सज्जन स्वभावाच्या योग्याला कसली चिंता करण्याचे कारणच नाही; त्यांच्याकडे लक्ष देणारे व सांभाळणारे श्री शिवशंकरच आहेत. म्हणून नाराज होणें, रागावणें हे सोडून द्या. दुसऱ्यांनी चांगलेच वागले पाहिजे, चुका करता कामा नये ही सवय व प्रवृत्ति विसरा. दुसऱ्यांना माफ करणे दूरच पण त्यांचा सर्वनाश व्हावा ही वासना बाळगणेही चुकीचे आहे.

जोपर्यंत माणसाला आत्मसाक्षात्कार होत नाही तोपर्यंत तो स्वतःला नीट ओळखू शकत नाही; आपण पशू नसून मनुष्य आहोत याची विशेषतःही त्याला समजत नाही. जनावरेसुद्धा उगीचच कधी नाराज होत नाहीत, कारण त्यांचा शिव सांभाळ करत असतात. माणसाचा हा दुर्गुण फार अपायकारक आहे व त्यामुळें त्याच्यामधील शिवशक्ति नष्ट होत जाते. मग हिटलरसारखे हजारो लोकांना ठार मारणारे पैदा होतात. त्यांतून अनेक संसार नष्ट झाले व देश बिकट स्थितीला आला. असे महावीर निर्माण होतच राहणार; पण त्यांचे तुम्ही अनुकरण करू नका.

तुम्ही सहजयोगी आहांत म्हणून तुम्ही सदैव क्षमा करत रहा. क्षमाशीलता हा सज्जनांचा मोठा गुण आहे व ती फार मोठी शक्ति आहे. म्हणूनच शिवशंकरांना देवांचे देव, महादेव, असे मानले आहे. त्यांना स्वतःला कांहीही जरूरी नसते; कपडेही नसून भस्म लावून राहतात. पण जे कोणी दुसऱ्यांवर जबरदस्ती करून त्यांना छळतात त्यांना तेच शिक्षा देतात व त्यांचा नायनाट करतात. त्यांची क्षमाशक्ति जितकी अमाप आहे तेवढीच संहारशक्ति प्रचंड आहे. म्हणूनच माणसांनी त्यांना ओळखले पाहिजे; एरवी माणसाची धडगत नाही. जगांमधे राक्षसप्रवृत्तीचे अनेक रथी - महारथी होते पण शेवटी त्यांचे काय झाले? त्यांचे नामोनिशाणही मागे उरले नाही.

सहजयोग्यांनी हे लक्षांत ठेवले पाहिजे की ते रागावले, नाराज झाले तर लोक फार तर त्यांना वचकून राहतील, घाबरून त्यांची कामे करतील पण त्याचा काय फायदा? तुम्ही किती लोक जोडले याला महत्त्व आहे; किती लोकांशी भांडलात याला किंमत नाही. कांहीजणांना ऊठवस, तंटा- झगडा - वाद करण्याची संवयच असते. त्यांना तोंडावर लोक मान देतील कदाचित पण त्यांच्याबद्दल कुणाला प्रेम वाटणार नाही. सहजयोग प्रेमाचा सागर आहे. राग बाळगणें, रागावणें वा नाराज होणे याला अर्थ नाही. येशू ख्रिस्तांकडे पहा, त्यांना सुळावर चढविणाऱ्यांनाही क्षमा करण्याची प्रार्थना त्यांनी देवाजवळ केली. सहजयोग्यांमध्ये जेव्हां ही क्षमाशीलता येते तेव्हां ते समर्थ शक्तिशाली बनतात, त्यांना शिवांचे गुण प्राप्त होतात, श्रीशिवाचे त्यांना आशीर्वाद मिळतात. म्हणून आजच्या पूजेच्या दिवशी हे सर्व विचारपूर्वक ध्यानांत घ्या. आपल्या देशांत कांही लोकांनी जे मारामारी व लुटालुटीचे अनिष्ट प्रकार चालवले आहेत त्यात सहजयोग्यांनी अडकून घेऊ नये. त्या भानगडींत कांही अर्थ नाही.

आजच्या शिवपूजेच्या दिवशी तुम्ही सर्वजण संकल्प करा की आम्ही रागाची भावना ठेवणार नाही, कुठल्याही परिस्थितीत क्रोधावर संयम राखू. हृदयापासून श्रीशिवांना या पूजेमधून प्रसन्न करा व त्यांचे गुण आत्मसात करा.

सर्वांना अनंत आशीर्वाद.

